व्याप्ति (Induction)

अनुमान का आधार व्याप्ति है। व्याप्ति से दो वस्तुओं के आपसी संबंध का ज्ञान होता है। व्याप्ति का सामान्य अर्थ है - 'व्यापकता'। यह एक विशेष प्रकार का संबंध है, जिसके द्वारा दो वस्तुएँ आपस में सम्बद्ध होती हैं। इनमें एक को 'व्यापक' और दूसरे को 'व्याप्य' कहते हैं। व्यापक उसे कहते हैं - जो व्याप्त रहता है और व्याप्य वह है जिसमें वह व्याप्त रहता है। उदाहरण के लिए - धुँआ और आग के बीच व्याप्ति संबंध है। यहाँ धुँआ व्याप्य और आग व्यापक है।

परिभाषा → "हेतु (लिंग) और साध्य का नियत साहचर्य ही व्याप्ति है"। अर्थात अनुमान दो बातों पर निर्भर करता है -

(i) हेतु (धुँआ) का पक्ष में ज्ञात रहना चाहिए और
(ii) हेतु का और साध्य (आग) का नियत साहचर्य (सदैव साथ-साथ रहना) ज्ञात होना चाहिए।

संक्षेप में हम कह सकते हैं कि, "हेतु (धुँआ) का साध्य (आग) से जो नियत सम्बन्ध है, वही व्याप्ति है और यही अनुमान का आधार है"।

व्याप्ति के प्रकार :- व्याप्ति दो प्रकार की होती है - समव्याप्ति और विषमव्याप्ति।

(i) समव्याप्ति - जिस व्याप्ति संबंध से जुड़ी हुयी दो वस्तुओं की वस्तुवाचकता बराबर हो, उसे समव्याप्ति कहते हैं। जैसे - 'मनुष्य' और 'विवेकशील प्राणी' में समव्याप्ति है; क्योंकि दोनों की वस्तुवाचकता बराबर है। जो मनुष्य है वह विवेकशील प्राणी है और जो विवेकशील है, वह मनुष्य है।

(ii) विषमव्याप्ति - जिस व्याप्ति संबंध से जुड़ी दो वस्तुएँ वस्तुवाचकता में बराबर न हों, उसे विषम-व्याप्ति कहते हैं। उदाहरण के लिए - धुँआ

और आग में विषम व्याप्ति है। यहाँ धुएँ (व्याप्य) के विस्तार की अपेक्षा आग (व्यापक) का विस्तार अधिक है। अतः धुएँ से आग का अनुमान तो किया जा सकता है, किंतु आग से धुँए का अनुमान करना उचित नहीं है। क्योंकि कई वस्तुएँ ऐसी हैं, जो, अग्नियुक्त होते हुए भी धुँआरहित हैं; जैसे कि,- लोहे की तपती छड़ या बिजली का चूल्हा आदि।

इस प्रकार से "व्याप्ति हेतु और साध्य का नियत और निरुपाधिक (Unconditional) सम्बन्ध है"। हेतु के साथ साध्य को हमेशा रहना चाहिए और उनके संबंध को किसी उपाधि (condition) के द्वारा परिच्छिन्न (सीमित) नहीं होना चाहिए।

न्याय के अनुसार व्याप्ति की स्थापना

न्याय के मतानुसार व्याप्ति की स्थापना दो; (4) विधियों द्वारा पूर्ण होती है। ये निम्नलिखित हैं —

(1)- अन्वय → एक वस्तु के भाव से दूसरी वस्तु का भी भाव होना अन्वय कहलाता है। जैसे, 'जहाँ-जहाँ धुँआ है, वहाँ-वहाँ आग है'। यह पाश्चात्य तार्किक मिल के 'Method of Agreement' मिलता-जुलता है।

(2)- व्यतिरेक → एक वस्तु के अभाव से दूसरी वस्तु का अभाव हो जाना व्यतिरेक कहा जाता है। जैसे - 'जहाँ जहाँ आग नहीं है वहाँ-वहाँ धुँआ भी नहीं है'। अर्थात् एक के नहीं रहने पर दूसरे का भी नहीं रहना व्यतिरेक कहलाता है। यह मिल के 'Method of Difference' के सदृश है।

(3) - व्यभिचाराग्रह → दो वस्तुओं के बीच व्यभिचार का अभाव व्यभिचाराग्रह कहा जाता है। व्याप्ति सम्बन्ध की निश्चितता व्यभिचार के अभाव पर ही निर्भर करती है। जैसे कि, धुँआ के साथ हम निरन्तर आग का अनुभव करते हैं। आज तक कोई ऐसा स्थान देखने को हमें नहीं मिला है जहाँ पर धुँआ हो परन्तु आग न हो। अतः इस अव्याघातक अनुभव के आधार पर ही हम कहते हैं कि जहाँ-जहाँ धूम है वहाँ-वहाँ अग्नि है।

(4) - उपाधिनिरास - व्याप्ति संबंध होने के लिए हेतु (धुँआ) और साध्य (आग) के मध्य अनौपाधिक संबंध होना चाहिए। यही उपाधिनिरास की विधि है। दो पदों में व्याप्ति संबंध स्थापित करने के पूर्व यह देख लेना आवश्यक है कि यह संबंध किसी शर्त या उपाधि पर आश्रित तो नहीं है।

उपाधियों का बहिष्करण (उपाधिनिरास) 'भूयोदर्शन' द्वारा संभव है। भूयोदर्शन के आधार पर ही उपाधिनिरास की प्रक्रिया पूरी की जा सकती है। उदा० - धुएँ और आग में व्याप्ति-संबंध है, जो किसी प्रकार की उपाधि पर यह संबंध निर्भर नहीं है। किंतु, आग और धुएँ के बीच व्याप्ति संबंध नहीं कहा जा सकता क्योंकि यह संबंध एक उपाधि पर निर्भर है। आग से धुएँ का अनुमान करने के लिए ईंधन का भींगा/गीला रहना आवश्यक है। ईंधन का गीला रहना ही उपाधि है। अतः इससे निष्कर्ष निकलता है कि व्याप्ति स्थापना के लिए उपाधि-निरास आवश्यक होता है।

(Note - भूयोदर्शन → अन्वय तथा व्यतिरेक के अधिक-से-अधिक उदाहरणों को लेकर उपाधियों का निराकरण करना ही भूयोदर्शन है।)

(5) - तर्क → नैयायिक तर्क के द्वारा भी अपने मत की पुष्टि करता है ताकि किसी संशयवादी के मन में संदेह न रह सके। चूँकि चार्वाक तथा ह्यूम आदि यह आपत्ति करते हैं कि अनुभव तो केवल वर्तमान तक सीमित है। इस पर आधारित व्याप्ति भविष्य में कैसे सही मानी जा सकती है? जैसे वर्तमान समय में धुआँ के साथ आग को देखकर यह नहीं कहा जा सकता कि भविष्य में भी धुँआ के साथ आग होगी। इस पर नैयायिक तर्क द्वारा उत्तर देते हुए कहते हैं कि — 'यदि सभी धूमवान पदार्थ अग्नियुक्त है' - असत्य है तो उसका पूर्ण विरोधी वाक्य 'कुछ धूमवान पदार्थ अग्नियुक्त नहीं है' - अवश्य सत्य होगा। इसका कारण यह है कि दो पूर्ण विरोधी वाक्य एक ही साथ असत्य नहीं हो सकते। अतः इससे सिद्ध होता है कि धुआँ और आग में व्याप्ति संबंध है।

(6) - सामान्य लक्षण-प्रत्यक्ष → व्याप्ति में पूर्ण निश्चयात्मकता लाने के लिए नैयायिक सामान्य लक्षण-प्रत्यक्ष का सहारा लेते हैं। इसके द्वारा किसी वस्तु या व्यक्ति के प्रत्यक्ष में उसकी जाति का भी प्रत्यक्ष हो जाता है। यह अलौकिक प्रत्यक्ष का एक भेद है।

उदाहरण - एक मनुष्य के प्रत्यक्ष में ही उसकी जाति मनुष्यत्व का भी हमें प्रत्यक्ष ज्ञान हो जाता है। मनुष्यत्व एवं मरणशीलता के बीच साहचर्य संबंध का प्रत्यक्ष करते हुए हम कह सकते हैं कि — "सभी मनुष्य मरणशील हैं।"

इस प्रकार से इन छः विधियों द्वारा हम व्याप्ति की स्थापना करने में सक्षम हो सकते हैं अर्थात् व्याप्ति संबंध को स्थापित किया जा सकता है। जो कि अनुमान का आधार भी है। क्योंकि इसके अभाव में हम अनुमान को सही रूप में नहीं जान सकते।

—x—